Online at: https://researchtrendsjournal.com **ISSN No:** 2584-282X

INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT

Volume 2; Issue 5; 2024; Page No. 69-73

Received: 02-07-2024
Accepted: 06-08-2024

स्नातक स्तर के कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक संतुष्टि का अध्ययन

[1]ममता मेहरा, [2]डॉ. विकेश कामरा

[1]शोधकर्ता, ग्लोकल स्कूल ऑफ एजुकेशन, द ग्लोकल यूनिवर्सिटी, मिर्जापुर पोल, सहारनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत
[2]प्रोफेसर, शोध निर्देशक, ग्लोकल स्कूल ऑफ एजुकेशन, द ग्लोकल यूनिवर्सिटी, मिर्जापुर पोल, सहारनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author: ममता मेहरा

सारांश

शिक्षा राष्ट्र के विकास की कुंजी है। राष्ट्र द्वारा शिक्षा के सम्बन्ध में पर्याप्त धन व्यय किया जाता है। शिक्षा राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक, औद्योगिक, राजनैतिक पक्षों को आधार प्रदान करती है। शिक्षा व्यक्ति में उच्च गुणों का विकास करके उसे सुयोग्य बनाती है। भारत जैसा देश शिक्षा की अवहेलना नहीं कर सकता। परन्तु यहाँ अनेकों समस्याएँ हैं जिस कारण यहाँ शिक्षा पर उपयुक्त धन व्यय नहीं किया जाता है। इसलिए यह आवश्यक है कि धन का उचित उपयोग करके देश को अधिकाधिक लाभ पहुँचाया जाये। अनुत्तीर्ण छात्रों की संख्या तथा उत्तीर्ण छात्रों की योग्यता को देखकर यह अन्दाजा लगाया जा सकता है कि शिक्षा पर व्यय किये जाने वाले धन का अधिकांश भाग व्यर्थ हो रहा है। छात्रों की असंतुष्टि एक विस्फोटक रूप धारण कर चुकी है। उनकी यह असन्तुष्टि सामाजिक क्रियाकलापों में उभरकर सामने आती है। छात्र भ्रमित तथा लक्ष्यहीन होकर अपनी ऊर्जा का गलत प्रयोग करते हैं। अतः छात्रों की ऊर्जा का सही उपयोग करने के लिए उनमें असंतुष्टि के कारणों की खोज करना परम आवश्यक है। सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण से ज्ञात होता है कि भारत देश में छात्रों की शैक्षिक संतुष्टि–असन्तुष्टि से सम्बन्धित कारकों पर शोध का पर्याप्त अभाव है।

मूलशब्द: शिक्षा राष्ट्र, विकास, शिक्षा, सामाजिक, आर्थिक, औद्योगिक

प्रस्तावना

शिक्षा का मानव जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा मानव का सम्पूर्ण विकास करती है। यह सर्वमान्य सत्य है प्रत्येक अभिभावक का यह सपना होता है कि उसका बालक उत्तम से उत्तम शिक्षा ग्रहण करे तथा अपने शिक्षण काल में वह पूर्ण संतुष्टि प्राप्त करे। जब बालक पूर्ण संतुष्टि के साथ शिक्षा गृहण करता है तब शिक्षा के क्षेत्र में धीरे–धीरे सीखकर ज्ञान के शिखर तक पहुँचता है और देश के विकास में अपनी भागीदारी करता है। शिक्षा प्राप्ति के लिए एक बालक को भिन्न–भिन्न विषयों का अध्ययन कराया जाता है। प्रारम्भिक शिक्षा से लेकर माध्यमिक शिक्षा तक बालक को लगभग सभी विषयों को पढ़ाया जाता है जिनकी बालक अथवा शिक्षार्थी को अपने जीवनकाल में समय–समय पर आवश्यकता पड़ती है। परन्तु उच्चतर माध्यमिक स्तर तक पहुँचते–पहुँचते बालक को स्वयं की रूचियों के अनुसार विषयों का चयन करके अध्ययन करना होता है। कुछ बालक अपने जीवन में वैज्ञानिक बनना चाहते हैं, कुछ बालक प्रशासनिक अधिकारी बनना चाहते हैं, कुछ बालक राजनीतिज्ञ बनना चाहते हैं, कुछ बालक व्यवसायी बनना चाहते हैं, कुछ बालक चित्रकार बनना चाहते हैं, कुछ बालक कलाकर बनना चाहते हैं, कुछ बालक इंजीनियर बनना चाहते हैं, कुछ बालक डॉक्टर बनना चाहते हैं, कुछ बालक सरकारी क्षेत्र में अपना करियर बनाना चाहते हैं, कुछ बालक निजी क्षेत्र को महत्ता प्रदान करते हैं। इस प्रकार प्रत्येक बालक अपने सम्भावित व्यवसाय/सेवा/रूचि के अनुरूप विषयों का चयन करते है तथा अध्ययन करते हैं।

यह स्थिति स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के समक्षा भी उत्पन्न होती है। स्नातक स्तर पर बालक अपनी रूचि, योग्यता, क्षमता, आवश्यकता आदि के अनुरूप विषयों का चयन करता है तथा अध्ययन प्रारम्भ करता है। अतः छात्र की प्रभावी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के लिए आवश्यक है कि उसे पूर्ण संतुष्टि प्राप्त हो। किन्तु छात्रों में शैक्षिक संतुष्टि का अभाव दिखाई देता है।

भारत जैसे प्रजातान्त्रिक देश में शिक्षा की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण और सार्थक है। प्रजातन्त्र जनता का जनता के लिए, जनता द्वारा शासन है। प्रजातान्त्रिक व्यवस्था में आर्थिक राजनैतिक, सामाजिक पक्षों को ध्यान में रखते हुए व्यक्तियों का समुचित ढंग से विकास किया जाना अपरिहार्य है। इस कार्य के लिए शिक्षा ही सबसे उपयुक्त उपागम है। चिन्तन अभिव्यक्ति एंव कर्म स्वतन्त्रय की विचाराधारा शिक्षा से प्रभावित होने के साथ–साथ शिक्षा को भी प्रभावित करती है।

वास्तव में शिक्षा मानव तथा समाज दोनों के लिए आवश्यक है। मानव के द्वारा समाज का तथा समाज में रहकर मानव का

विकास होता है। शिक्षा के द्वारा ही मानव की अपने अधिकारों, उत्तरदायित्वों एवं कर्तव्यों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त होती है तथा शिक्षा ही मानव को इन अधिकार, दायित्व एवं कर्तव्यों का पालन करना सीखाती है। शिक्षा की लोकतन्त्र/प्रजातंत्र की रीढ़ की हड्डी माना गया है। अतः लोकतंत्र की सफलता के लिए तथा मनुष्य में लोकतंत्र की गुणवत्ता की भावना को बनाये रखने के लिए शिक्षा की गुणवत्ता को समृद्ध करना तथा तथा उसका प्रसार करना अत्यन्त आवश्यक है। प्रजातांत्रिक शिक्षा प्रणाली में मनुष्य/प्रत्येक व्यक्ति को उसकी रूचि, योग्यता, क्षमता, आवश्यकता के अनुसार अधिकतम विकास के अवसर उपलब्ध कराये जाते हैं जिससे मानव को पूर्ण संतुष्टि प्राप्त हो सके और वह राष्ट्रहित में अपना पूर्ण योगदान दे सके।

भारत एक ऐसा देश है जहाँ विभिन्नता में एकता दिखाई देती है। यहाँ विभिन्न जाति, धर्म, सम्प्रदाय, संस्कृति के लोग रहते हैं जिनकी अपनी एक अलग भाषा होती है। इसके साथ ही भारत में प्रजातंत्र का रास्ता सहज नहीं है। लोक अपनी आवश्यकतानुसार रिश्वत देकर अपना काम कराने में अधिक विश्वास रखते हैं। यही स्थिति आजकल शिक्षा व्यवस्था में भी देखने को मिलती है। अतः प्रायः हमारी लोकतंत्र प्रणाली के असफलता के सम्बन्ध में विवाद उत्पन्न होता रहता है। लोकतंत्र की इस असफलता का प्रमुख कारण हमारी अशिक्षा है। अशिक्षित व्यक्तियों द्वारा योग्य व्यक्तियों का चयन करना बहुत ही मुश्किल दिखाई देता है। क्योंकि शिक्षा के अभाव में मतदाता अपने अधिकार के प्रति उदासीन रहता है तथा अपने अधिकार का प्रयोग उचित ढंग से नहीं कर पाता है। देश की बागडोर विजयी प्रत्याशी के हाथ में दे दी जाती है। यदि शासक वर्ग का चयन उसकी योग्यता के आधार पर नहीं होता है तो राष्ट्र की अखण्डता तथा जनसाधारण के हितों की रक्षा का कार्य कठिन हो जायेगा और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्र की प्रतिष्ठा को बनाये रखना मुश्किल होगा। शिक्षा के प्रसार द्वारा ही इस विपत्ति की स्थिति को दूर किया जा सकता है तथा देश को समृद्ध बनाया जा सकता है।

राष्ट्रीय एकता के सम्बन्ध में शिक्षा अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है। शिक्षा मावन व्यवहार में परिवर्तन का सबसे सुदृढ़ साधन है। वर्तमान राजनीतिक परिस्थितियों ने ऐसे बीज का रोपण किया है जिससे देश में विभाजक परिस्थितियाँ उत्पन्न हो गयी हैं। इन विषम परिस्थितियों को दूर करने के लिए शिक्षा ही एकमात्र ऐसा दीपक है जो अपने प्रकाश को चारों दिशाओं में फैला सकता है। अतः राष्ट्रीय अखण्डता, धर्म–निरपेक्षता, समानता, उच्च जीवन स्तर, दृढ़ नैतिक चरित्र, अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा आदि के सम्बन्ध में शिक्षा को कम नहीं आंका जा सकता है। शिक्षा के द्वारा ही इन तत्वों की प्राप्ति सम्भव है।

भारतीय समाज में शिक्षा को अद्वितीय स्थान प्राप्त है। स्वतन्त्रता के उपरान्त भारतीय नेतृत्व ने लोकतंत्रीय व्यवस्था में शिक्षा की सार्थक भूमिका को स्वीकार किया और राष्ट्रीय विकास में शिक्षा के योगदान को बनाये रखने के लिए संविधान निर्माण के समय धारा 45 में व्यवस्था की गयी थी कि ''राज्य इस संविधान के प्रारम्भ होने के 10 वर्ष की अवधि के अन्तर्गत सभी बालकों की 14 वर्ष की आयु पूरी करने तक निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा देने के लिए प्रयास करेगा।''

परन्तु केन्द्र एवं राज्य सरकारों के प्रयास के बावजूद भी यह स्वप्न साकार न हो सका और संविधान संशोधन 2002 में शिक्षा को नागरिकों का मूल अधिकार बानने का निर्णय लिया। शिक्षा व्यक्तिव के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक तत्व है। तत्व है। महात्मा गांधी जी ने शिक्षा के सम्बन्ध में कल्पना की थी कि शिक्षा का उद्देश्य अंहिसक तथा शोषण रहित सामाजिक, आर्थिक व्यवस्था की स्थापना करना है। प्रजातंत्रीय समाज में शिक्षा की भूमिका अत्यन्त सुस्पष्ट है। पं0जवाहर लाल नेहरू जी ने भी शिक्षा को राष्ट्र के विकास में अग्रणीय माना है।

सम्बन्धित साहितय का सर्वेक्षण

अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण चरण सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण करना होता है। सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान समस्या से सम्बन्धित ऐसे सभी साहित्य से है, जो समस्या के किसी अंश पर प्रकाश डालते हैं, अथवा समस्या समाधान के प्रयासों में मार्गदर्शन कर सकते हैं। यह साहित्य पुस्तकों, पत्र, पत्रिकाओं, सन्दर्भ ग्रन्थों प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबन्धों, शैक्षिक साहित्यों अथवा अभिलेखों के रूप में हो सकता है।

यादव (1986) ने एम0एड0 पाठ्यक्रम की आंशिकपूर्ति के लए इलाहाबाद शहर के माध्यमिक विद्यालयों की कक्षा एकादश साहित्य वर्ग में अध्ययनरत 210 विद्यार्थियों को प्रतिदर्श लेते हुए विद्यालय से सन्तुष्ट एवं असन्तुष्ट छात्रों के दृष्टिकोणों एवं मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया। इस अध्ययन में उन्होंने पाया कि सन्तुष्ट एंव असन्तुष्ट छात्रों के शिक्षा, विद्यालय, अनुशासन, समाज एंव नैतिकता के प्रति दृष्टिकोण सार्थक रूप से भिन्न–भिन्न थे। यह भी पाया गया कि सन्तुष्ट एवं असन्तुष्ट छात्र दस में से छः मूल्यों पर सार्थक रूप से भिन्न–भिन्न ये छः मूल्य थे। सामाजिक मूल्य, आर्थिक मूल्य, प्रजातान्त्रिक मूल्य, सौन्दर्यात्क मूल्य, पारिवारिक मूल्य तथा मर्यादामूल्य।

जे०वी० सिहं (1994) 'द' कम्पोरिटव स्टडी ऑफ अकेडमिक सैटिस फैक्शन ऑफ स्टूडेन्ट्स ऑफ मेरठ यूनिवर्सिटी कैम्पस एण्ड एफीलिराटिड कॉलिज इन विलेशन टू देअर इन्टेलीजेन्स सोशियों इकोनोमिक स्टेटस एण्ड एकेडमिक मोटिवेशन, पी०एच०डी० थीसिस मेरठ यूनिवर्सिटी अनपब्लिशड 1995।

मदन मोहन भारद्वाज (2006) ''ए कम्पोरिटस्टडी ऑफ औरगेनाईजेशनल क्लाइमेंट, टीजर्स जॉब सैटिसफैक्शन एण्ड टीचिंग इफैक्टिवनैस ऑफ पुपिल्स टीचर्स ऑफ गारमेंट एण्ड सैल्फ फाईनेन्सड टीचर एजूकेशन इन्स्टीटूशन पी०एच०डी० थीसिड चौधरी चरण सिंह यूनिवर्सिटी मेरठ–2006 से निष्कर्ष निकाला है कि महाविद्यालयों के पर्यावरण से श्रेष्ठ होता है। जबकि स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में कार्य सन्तुष्टि निम्न स्तर की होती है। जबकि स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में अध्ययन करने वाले छात्राध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता अनुदानित महाविद्यालयों की शिक्षण प्रभावशीलता से श्रेष्ठ होती है।

हेमलता चौहान (2009) ने सरकारी तथा गैर–सरकारी महाविद्यालयों में अध्ययनरत स्नातक छात्रों की शैक्षिक सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन में पाया गया कि दोनों ही महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक सन्तुष्टि में अन्तर नहीं होता है।

प्रज्ञा शर्मा (2011) ने एम0एड0 पाठ्यक्रम में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक सन्तुष्टि एवं विद्यालयी वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन में इन्होंने पाया कि छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक सन्तुष्टि पाठ्यक्रम भौतिक सुविधा, परीक्षा प्रणाली, पुस्तकालय, शिक्षण विधि, सहपाठी समूह आयामों पर समान पायी गयी तथा पाठ्य सहगामी क्रियाओं व शिक्षक आयाम पर छात्रों की शैक्षिक सन्तुष्टि छात्राओं से अधिक पायी गयी। इन्होंने पाया कि शैक्षिक सन्तुष्टि पर विद्यालयी वातावरण का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

शोध के उद्देश्य–

1. स्नातक स्तर पर कला वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक संतुष्टि का अध्ययन करना।
2. स्नातक स्तर पर विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक संतुष्टि का अध्ययन करना।

वर्तमान मनोविज्ञान वातावरण में संतुष्टि–असंतुष्टि को मानव व्यवहार की एक महत्वपूर्ण विमा माना जाता है। संतुष्टि–अंसतुष्टि पर ही मानव जीवन का सम्पूर्ण चक्र निर्भर करता है। कोई भी व्यक्ति अपने कार्य से संतुष्टि होने पर अभिप्रेरित होता है तथा असंतुष्टि की दशा में वह निराशा से ग्रसित होता है तथा नकारात्मकता को प्राप्त करता है। पोफेनबरगर के ठीक ही कहा है कि, ''संतोष की एक इलक सम्पूर्ण दिन के कार्य को आल्हादित कर देती है तथा घटनाओं को निर्विघ्न रूप से सम्पन्न करती है जबकि असंतोष की एक ही बदली कार्यकर्ता को नैराश्य की धुंध में घेर व लपेट लेती है।'' वर्तमान में मानव जीवन को समस्याओं ने भंयकर रूप से धारण कर लिया है। अतः व्यक्ति को अपने कार्य में कुछ–न–कुछ संतुष्टि अवश्य मिलनी चाहिए। संतुष्टि को मानव जीवन समायोजन के उद्देश्य में शामिल किया जाना चाहिए। पोफेनबरगर के अनुसार, ''किसी व्यक्ति का जीवन दर्शन कुछ भी क्यों न हो, ऐसा प्रतीत होता है कि कार्यकर्ता अपने कार्य के प्रतिफल के रूप में किसी निश्चित न्यूनतम प्रतिफल का अधिकारी है। अतः मानव जीवन में संतुष्टि अत्यन्त आवश्यक है। यही स्थिति विद्यार्थियों के सम्बन्ध में भी परिलक्षित होती है। विद्यार्थियों में अगर संतोष होगा तो वे अधिक रूचिपूर्ण, तल्लीनता, परिश्रम, लग्न से अध्ययन कार्य को पूर्ण करेंगे तथा देश के भविष्य को उज्जवल बनाने में अपना योगदान देंगे। आज का बालक ही कल का कर्णधार है। परन्तु खेद है कि देश का यह महत्वपूर्ण अंग अभिभावकों, शिक्षकों एवं समाज के लिए एक ज्वलन्त समस्या बना हुआ है। वर्तमान में छात्र उद्दण्ड, उच्छखल, खोये हुए, भविष्य के प्रति निराश, दिग्भ्रमित तथा विद्रोही प्रतीत होते हैं। उनमें विनय, अनुशासन, शिष्टता, कर्तव्यपरायणता तथा सदाचार दर्शन दुर्लभ हो गया है। नई पीढ़ी 'मातृ देवो भर्व' 'पितृ देवो भव' के भाव से अपरिचित ही है।

शिक्षा के व्यापक प्रसार तथा सकारात्मक परिवर्तन के बावजूद भी छात्रों की स्थिति में विशेष सुधार देखने को नहीं मिलता है। विद्यालयों में शिक्षकों की कमी, कक्षा में छात्रों की अधिकता तथा कक्षा का वातावरण नीरस होने से बालक स्कूल से भाग जाते हैं तथा छात्रों को स्कूल के बाहर सड़क पर नुक्कड़ नाटक पर, अंधेरी गली में, गिरोह में सिगरेट, जुआ, छोड़छाड़ चोरी आदि दुष्कर्मों में लिप्त देखा जाता है। छात्रों के द्वारा की जाने वाली आगजनी, पथराव, अनुशासनहीनता, हिंसा, उद्दण्डता आदि का कारण असंतोष ही है। आज का छात्र क्यों अपने लक्ष्यों से दिग्भ्रमित होकर इतना उग्र होता जा रहा है? छात्रों में 'गुरू देवो भव' का भाव क्यों लुप्त होता जा रहा है? क्यों छात्रों में नेतागिरी, दादागिरी का विकास हो रहा है? क्यों छात्रों में असंतोष बढ़ रहा है? उनमें व्याप्त तनाव, चिन्ता, निराशा, कुण्ठा आदि के क्या कारण है? इस प्रकार के अनेक प्रश्नों का नितान्त समाधान खोजना आवश्यक है। अमनोवैज्ञानिक पाठ्यक्रम, अप्रभावशाली अध्यापक, पुस्तक केन्द्रित अव्यवहारिक शिक्षा, अनिश्चित भविष्य आदि अनेक कारण छात्र असन्तुष्टि के लिए उत्तरदायी हो सकते हैं।

सांख्यिकीय विश्लेषण एवं व्याख्या

सारणी 1: स्नातक स्तर पर कला वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक सन्तुष्टि का अध्ययन

छात्रों की संख्या (N)	मध्यमान (M)	मनक विचलन (SD)	$\left(M_{+SD}^{+1\sigma}\right)$	$\left(\left(M_{-sD}^{-1\sigma}\right)\right)$	No. of Student $(+1^{\sigma})$ Value	Between $+1\sigma$& -1σ	No. of Student -1σ Value
30	232-56	19-0	251-60	213-52	6	21	3
					20%	70%	10%

विवरण को सामान्य मानते हुए $+1\sigma$ से ऊपर अंक प्राप्त करने वाले है। -1σ से नीचे अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को निम्न शैक्षिक सन्तुष्टि वाले तथा $+1\sigma$ से -1σ के मध्य अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को औसत शैक्षिक सन्तुष्टि वाले वर्ग में रखा गया है।

सारणी में कला वर्ग में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक सन्तुष्टि का मध्यमान 235.56 तथा मानक विचलन 19.0 प्राप्त हुआ है। $+1\sigma$ का मान 251.6 से 20 प्रतिशत शिक्षार्थी अधिक शैक्षिक सन्तुष्टि रखने वाले पाये गये तथा 10 प्रतिशत विद्यार्थियों की शैक्षिक सन्तुष्टि को निम्न वर्ग में रखा गया है। 30 में से 70 प्रतिशत शिक्षार्थी औसत शैक्षिक सन्तुष्टि वाले पाये गये।

यदि इस विवरण की तुलना एक सामान्य सम्भाव्यता वक्र से की जाये तो यह एक मीजोक्रटिक वक्र होगा। अर्थात अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक सन्तुष्टि का वितरण सामान्य है।

सारणी 2: स्नातक स्तर पर विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक सन्तुष्टि का अध्ययन

छात्रों की संख्या (N)	मध्यमान (M)	मनक विचलन (SD)	$\left(M_{+SD}^{+1\sigma}\right)$	$\left(\left(M_{-sD}^{-1\sigma}\right)\right)$	No. of Student $+1\sigma$ Value	Between $+1\sigma$& -1σ	No. of Student -1σ Value
30	238-8	17-90	256-7	220-9	6	6	4
					20%	67.67%	13.33%

विवरण को सामान्य मानते हुए $+1\sigma$ से ऊपर अंक प्राप्त करने वाले विज्ञान वर्ग में अध्ययनरत विद्यार्थियों को अधिक शैक्षिक सन्तुष्टि के वर्ग में रखा गया है। -1σ से नीचे अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को निम्न शैक्षिक सन्तुष्टि वाले तथा $+1\sigma$ से -1σ के मध्य अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को औसत शैक्षिक सन्तुष्टि वाले वर्ग में रखा गया है।

सारणी में विज्ञान वर्ग में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक सन्तुष्टि का मध्यमान 238.8 तथा मानक विचलन 17.9 प्राप्त हुआ है। $+1\sigma$ का मान 256.7 तथा -1σ का मान 220.9 प्राप्त हुआ। विज्ञान वर्ग में अध्ययनरत 30 विद्यार्थियों में से 20 प्रतिशत शिक्षार्थी अधिक सन्तुष्टि रखने वाले पाये गये तथा 13.33 प्रतिशत विद्यार्थियों की शैक्षिक सन्तुष्टि को निम्न वर्ग में रखा गया है। 30 से 67.67 प्रतिशत शिक्षार्थी औसत शैक्षिक सन्तुष्टि वाले पाये गये। यदि इस विवरण की तुलना एक सामान्य सम्भाव्यता वक्र से की जाये तो यह एक मीजोक्रटिक वक्र होगा। अर्थात अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक सन्तुष्टि का वितरण सामान्य है।

सारणी 3: स्नातक स्तर पर कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक सन्तुष्टि के पाठ्यक्रम आयाम की तुलना

क्र० सं०	स्मूह का नाम	कुल (N)	मध्यमान (M)	मनक विचलन	टी मान	सार्थकता का स्तर
1	कला वर्ग	30	25.53	6.01	1.14	सार्थक नहीं है।
2	विज्ञान वर्ग	30	27.20	5.74		

सारणी संख्या 3 में स्नातक स्तर पर कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक सन्तुष्टि के पाठ्यक्रम आयाम की तुलना टी मान के रूप में गयी है। सारणी को देखने से ज्ञात होता है कि कला वर्ग का मध्यमान 25.53 एवं मानक विचलन 6.01 तथा विज्ञान वर्ग का मध्यमान 27.20 तथा मानक विचलन 5.74 प्राप्त हुआ है। टी का मान 1.14 प्राप्त हुआ है जो कि सार्थकता के 0. 05 स्तर पर सार्थक नहीं है। क्योंकि टी सारणी के अनुसार 58 df के लिए सार्थकता के 0.05 स्तर पर न्यूनतम मान 1.69 है तथा प्राप्त टी का मान सारणी के अनुसार प्राप्त न्यूनतम मान से कम है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि कला एवं विज्ञान वर्ग के शिथार्थियों की शैक्षिक सन्तुष्टि के पाठ्यक्रम आयाम में सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी 4: स्नातक स्तर पर कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक सन्तुष्टि के भौतिक सुविधाएँ आयाम की तुलना

क्र०सं०	समूह का नाम	कुल (N)	मध्यमान (M)	मनक विचलन	टी मान	सार्थकता का स्तर
1	कला वर्ग	30	24.90	7.12	0.61	सार्थक नहीं है।
2	विज्ञान वर्ग	30	25.96	6.32		

सारणी संख्या 4 में स्नातक स्तर पर कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक सन्तुष्टि के भौतिक सुविधाएँ आयाम की तुलना टी मान के रूप में की गयी है। सारणी को देखने से ज्ञात होता है। कि कला वर्ग का मध्यमान 24.90 एवं मानक विचलन 7. 12 तथा विज्ञान वर्ग का मध्यमान 25.96 तथा मानक विचलन 6. 32 प्राप्त हुआ है। टी का मान 0.61 प्राप्त हुआ है जो कि सार्थकता के 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। क्योंकि टी सारणी के अनुसार 58 df के लिए सार्थकता के 0.05 स्तर पर न्यूनतम मान 1.96 है तथा प्राप्त टी का मान सारणी के अनुसार प्राप्त न्यूनतम मान से कम है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि कला एवं विज्ञान वर्ग के शिथार्थियों की शैक्षिक सन्तुष्टि के भौतिक सुविधाएँ आयाम में सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी 5: स्नातक स्तर पर कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक सन्तुष्टि के पाठ्य सहगामी क्रियाएँ आयाम की तुलना

क्र०सं०	समूह का नाम	कुल (N)	मध्यमान (M)	मनक विचलन	टी मान	सार्थकता का स्तर
1	कला वर्ग	30	26.10	5.98	2.17	सार्थक नहीं है।
2	विज्ञान वर्ग	30	29.13	4.92		

सारणी संख्या 1.5 में स्नातक स्तर पर कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक सन्तुष्टि के पाठ्य सहगामी क्रियाएँ आयाम की तुलना टी मान के रूप में की गयी है। सारणी को देखने से ज्ञात होता है। कि कला वर्ग का मध्यमान 26.10 एवं मानक विचलन 5.98 तथा विज्ञान वर्ग का मध्यमान 29.13 तथा मानक विचलन 4.92 प्राप्त हुआ है। टी का मान 2.17 प्राप्त हुआ है जो कि सार्थकता के 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। क्योंकि टी सारणी के अनुसार 58 df के लिए सार्थकता के 0.05 स्तर पर न्यूनतम मान 1.96 है तथा प्राप्त टी का मान सारणी के अनुसार प्राप्त न्यूनतम मान से कम है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि कला एवं विज्ञान वर्ग के शिथार्थियों की शैक्षिक सन्तुष्टि के पाठ्य सहगामी क्रियाएँ आयाम में सार्थक अन्तर है।

सारणी 6: स्नातक स्तर पर कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक सन्तुष्टि के परीक्षा प्रणाली आयाम की तुलना

क्र०सं०	समूह का नाम	कुल (N)	मध्यमान (M)	मनक विचलन	टी मान	सार्थकता का स्तर
1	कला वर्ग	120	24.97	5.42	0.07	सार्थक नहीं है।
2	विज्ञान वर्ग	120	24.90	5.28		

सारणी संख्या 6 में स्नातक स्तर पर कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक सन्तुष्टि के परीक्षा प्रणाली आयाम की तुलना टी मान के रूप में की गयी है। सारणी को देखने से ज्ञात होता है। कि कला वर्ग का मध्यमान 24.97 एवं मानक विचलन 5. 42 तथा विज्ञान वर्ग का मध्यमान 24.90 तथा मानक विचलन 5. 28 प्राप्त हुआ है। टी का मान 0.07 प्राप्त हुआ है जो कि सार्थकता के 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। क्योंकि टी सारणी के अनुसार 58 df के लिए सार्थकता के 0.05 स्तर पर न्यूनतम मान 1.96 है तथा प्राप्त टी का मान सारणी के अनुसार प्राप्त न्यूनतम मान से कम है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि कला एवं विज्ञान वर्ग के शिथार्थियों की शैक्षिक सन्तुष्टि के परीक्षा प्रणाली आयाम में सार्थक अन्तर है।

निष्कर्ष

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या नामक चतुर्थ अध्याय में अध्याय में शोधकत्री ने शोध उपकरणों को उच्च महाविद्यालयों के विद्यार्थियों पर प्रशासित करने के बाद आंकड़ों को सांख्यिकीय प्रविधि (टी टेस्ट) द्वारा विश्लेषण करके उन्हें शोध उद्देश्यों के क्रम में तालिकाओं में प्रस्तुत किया है। शोध निष्कर्ष नामक प्रस्तुत अध्याय में शोधकत्री ने सर्वप्रथम शोध परिकल्पनाओं की वैधता का परीक्षण किया, उसके बाद शोध परिकल्पनाओं की वैधता के आधार पर शोध परिणामों का उल्लेख किया है तथा शोध परिणामों के आधार पर शोध निष्कर्षों का प्रस्तुतीकरण किया गया है। अध्ययन के अन्त में अग्रिम शोध हेतु शीर्षकों का उल्लेख किया गया है। अग्रिम पंक्तियों में शोध परिकल्पनाओं की वैधता का परीक्षण किया गया है।

सन्दर्भ

1. शर्मा आर0ए0 विद्यालय प्रबन्ध तथा शिक्षण शास्त्र, सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ।
2. शर्मा, आर0ए0: अध्यापक शिक्षा, इन्टरनेशनल पब्लिकेशन हाउस, मेरठ।
3. गुप्ता एम0 बी0: थर्डसर्वेइन एज्यूकेशन राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, 1983.
4. सक्सेना, एन0 आर0 मिश्रा बी0 के0 मोहन्ती आर0 के0 अध्यापक, शिक्षा, सूर्या प्रकाशन, मेरठ कुकान विशाल प्रकाशन मन्दिन, मेरठ।, 1993.
5. शर्मा, हरस्वरूप. सांख्यिकीय विधियाँ। राम प्रकाश एण्ड सन्स, आगरा।, 1990.

6. रायजादा डा० बी० एस० शिक्षा में अनुसंधान के आवश्यक तत्व, राजस्थान तत्व, राजस्थान हिन्दी अकादमी, राजस्थान।, 1996.
7. एन0 सी0 ई0 आर0 टी0 नई दिल्ली 122, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2021.
8. बुच, एम0 पी0 ए सर्वे ऑफ रिसर्च एन एजूकेशन सी0 ए0 एस0 ई0 एस0 एस0 यूनिवर्सिटी, बड़ौदा, 1972.
9. बेस्ट जे डब्ल्यू–रिसर्च एजूकेशन प्रोन्टिस हॉल न्यू देहली, 1963।

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.